ch-(13) Recent development of science, Maths & Philosophy)

+ माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) के अनुसार वर्तमान गणित शिक्षण के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित दोष हैं -

(1) गणित के वर्तमान पाठ्यक्रम बहुत संकुचित हैं (Narrow)
(2) यह पुस्तकीय (Bookish) तथा सैद्धांतिक है (Theoretical)
(3) इसका छात्रों का जीवन में कोई महत्त्व नहीं है,
(4) इसमें विषय वस्तु (Content) का समावेश बहुत अधिक हुआ है लेकिन यह सार्थक और लाभदायक नहीं है,
(5) यह पाठ्यक्रम परीक्षा के प्रधानता (Examination ridden) पर आधारित है,
(6) इसमें तकनीकि तथा व्यवसायिक (Technical & Vocational) विषयों का सम्पूर्ण अभाव है,
(7) इसमें बालकों की रुचियों तथा आवश्यकताओं का कोई ध्यान नहीं दिया गया है,
(8) पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण निर्माण अमनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है,
(9) इसका क्रियान्वन प्रभावशाली ढंग से नहीं किया गया है,
10) बालक के साथ साथ समाज की आवश्यकताओं पर भी कोई ध्यान नहीं दिया गया है,

कोठारी कमीशन (1964-66) (1) इसके अनुसार गणित पाठ्यक्रम उपयोगी नहीं (not useful) है इसमें क्रियात्मक या रचनात्मक कार्यों का अभाव है,
(2) गणित के वर्तमान पाठ्यक्रम अपूर्ण है, जिसमें विद्यार्थी की सम्पूर्ण अनुभवों का समावेश नहीं किया गया है,
(3) वर्तमान पाठ्यक्रम बोझिल है (over packed) है, इसमें अपेक्षाकृत उपयोगी ज्ञान को सम्मिलित करना अति आवश्यक है,

पाठ्यक्रम का दोष कमीयां दूर करने का सुझाव
Suggestion for Improving the present curriculum)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

SOUTH POINT PUBLIC SCHOOL

वर्तमान गणित पाठ्यक्रम में जो जो कमीयाँ है, इनको सम्पूर्ण रूप से दूर करने और अधिक उपयोगी तथा समृद्धशाली (enriched) बनाया जा सकता है, सुधार के लिए कुछ बिन्दु पर जोर दिए गए हैं, जिनको सम्पूर्ण रूप से ध्यान रखकर पाठ्यक्रम का निर्धारण करना चाहिए। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) में वर्तमान पाठ्यक्रम में सुधार करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए हैं।

(i) पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ साथ अनुभवों की सम्पूर्णता (Totality of experience) को भी महत्व दिया जाना चाहिए, यह पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक है।

(ii) पाठ्यक्रम का बालक के सामाजीक तथा व्यवहारिक जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध होना चाहिए।

(iii) पाठ्यक्रम का निर्माण स्थानीय परिस्थितियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

(iv) पाठ्यक्रम का विभिन्न विषयों तथा दैनन्दिन जीवन से सम्बन्धित होना चाहिए,

(v) पाठ्यक्रम में ऐसी क्रियाओं का समावेश होना चाहिए जो समय का सदुपयोग होने का अवसर मिल सके,

(vi) पाठ्यक्रम में विविधता (variety) और लचीलापन (flexibility) होनी चाहिए जिससे छात्र अपनी योग्यता, रुचि और आवश्यकता के अनुसार ज्ञानार्जन कर सके,

Topic → शिक्षा दर्शन - (Educational Philosophy) - शिक्षा दर्शन ऐसे-प्रश्नो द्वारा सम्बन्धित है जैसे शिक्षा क्या है? शिक्षा क्या उद्देश्य क्या है? शिक्षा का दर्शन, शिक्षा - सम्बन्धी समस्या का दर्शन की दृष्टि से विवेचना करता है तथा यह शिक्षा को पूर्ण रूप से समझने का प्रयास करता है। शिक्षा का दर्शन एक अध्ययन है उद्देश्य, प्रक्रिया एवं शिक्षा

Scanned with CamScanner

का उद्देश्य का यह अध्ययन एक सामाजिक संस्था के सन्दर्भ मे किया जाता है जिसे अधिक विस्तार मे मानव अस्तित्व की वृद्धि की प्रक्रिया के अन्तर्गत लिया जाता है।

* शिक्षा दर्शन की प्रकृति (Nature of Educational Philosophy)
शिक्षा दर्शन सम्बन्धी समस्याओ के समाधान की ओर ले जाने वाला ज्ञान है, यह एक निर्देशात्मक सिद्धान्त (Directional Doctrine) एक उदार विषय (Liberal discipline) एक क्रिया (An Activity है)

* शिक्षा दर्शन एक निर्देशात्मक सिद्धान्त - Educational Philosophy a Directional Doctrine) शिक्षा दर्शन जब शिक्षा सम्बन्धी समस्याओ की विश्लेषण करता है तो उसका लक्ष्य उन समस्याओ के सम्बन्ध मे कुछ व्यावहारिक निर्देशों की ओर ध्यान दिलाना होता है, उदा - जब यह प्रश्न उठता है कि विद्यालयी पाठ्क्रम मे क्या सम्मिलित करना चाहिए तो हम इस ओर ध्यान देते है, पाठ्यक्रम विद्यार्थीयो को जीवन मे लक्ष्य प्राप्ती करने मे सहायक होते हैं, अतएव शिक्षा दर्शन की प्रकृति को हम निर्देशात्मक सिद्धान्त के रूप मे वर्णित कर सकते हैं,

* शिक्षा दर्शन एक उदार विषय है - (Educational Philosophy a Liberal discipline) - शिक्षा दर्शन एक संकीर्ण विषय नही है, इसका विस्तार बहुत अधिक हुआ है। इसका क्षेत्र व्यापक है तथा वह सब निर्धारित करता है जो कि शिक्षा दर्शन का स्वरूप का निर्माण करता है। इससे शिक्षा का उद्देश्य, पाठ्यक्रम मे चर्चा विषय वस्तु का ज्ञान, पाठ्य पुस्तक, शिक्षा एवं शिक्षार्थी का निखार, यह विद्यालयो का संगठन, प्रशासन, संचालन, और प्रबन्ध की ओर ध्यान देना है, विद्यालय मे अनुशासन सम्बन्धी समस्याओं पर गहन विचार करना है, तथा स्वतंत्रता तथा अनुशासन का महत्व पर प्रकाश डालता है। शिक्षा के उदारवादी दर्शन के अन्तर्गत सम्पूर्ण परिस्थिति ध्यान करता है, अरस्तु उदारवादी शिक्षा पर उस समय बल देता है जब वह सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक पक्षों का तालमेल पर आधारित होता है,

Total Marks

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

SOUTH POINT PUBLIC SCHOOL

Marks

शिक्षा दर्शन एक क्रिया है – (Educational Philosophy is an Activity) — दर्शनशास्त्र एक विचारात्मक विषय है, जबकि शिक्षा दर्शन विचारात्मक के साथ-साथ क्रियात्मक भी है, दर्शन शास्त्र चिंतन को महत्व देता है, यह सम्पूर्ण तरीके पूर्ण रूप से सिद्धान्त पर आधारित है, हमें दर्शनशास्त्र से आदर्श जीवन कैसा हो, तथा किस प्रकार से विचार-विमर्श किया जा सके, शिक्षा दर्शन के मार्ग को चलकर एक आदर्श जीवन जिया सकता है, शिक्षा दर्शन हमें हर-प्रकार की शिक्षा से परिचित करवाते हैं, रूसो शिक्षा दर्शन पर बल दिया है जबकि बालक अपने चारों ओर के वातावरण में भी रहता है Montessori और Froebel दर्शन भी शिक्षा का एक सम्पूर्ण क्रिया माना है, एक आदर्श दर्शन बनता है व्यक्ति के अनुभवों पर आधारित होकर, शिक्षा दर्शन एक उदार शास्त्र है (a liberal discipline) की भाँति कार्य करता है, शिक्षा दर्शन में सब पहलों का समावेश होता है, यह शिक्षा सम्बन्धित सिद्धान्तों को व्यापक रूप से जानकारी देता है तथा, उसके विश्लेषण करता है,

* शिक्षा दर्शन एक क्रिया की भाँति – (Educational Philosophy as an Activity) शिक्षा दर्शन न केवल सैद्धान्तिक रूप से हमारे सामने आता है वरना एक सम्पूर्ण क्रिया की भाँति इसका अस्तित्व है, यह दर्शन की भाँति चिन्तन का विषय नहीं है, परन्तु शिक्षा पर विशेष बल देता है, यह शिक्षा की पाठ्य-वस्तु के निर्माण एवं चुनाव में शिक्षा सम्बन्धी सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक निर्णय में यह हमें शैक्षिक विधियों पर निर्धारण करता है, यह व्यक्ति तथा समाज के सम्यक विकास में व्यावहारिक रूप से योगदान देता है। शिक्षा दर्शन अपने आप में सक्रिय भूमिका निभाता है तथा क्या विद्यालय शिक्षा का आवश्यक है, मानव मूल्य क्या है, जनतंत्रीय शिक्षा व्यवस्था क्या है इसकी रूपरेखा क्या होनी चाहिए इत्यादि पर बल देता है।

Total Marks

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner